पाठ्यक्रम की प्रकृति
(NATURE OF CURRICULUM)

प्राचीन काल में शिक्षा अनौपचारिक होने के कारण किसी क्रम में बंधी नहीं थी किन्तु सभ्यता के विकास के साथ-2 मानव के ज्ञान राशी में वृद्धि हुयी अत: प्रत्येक विकास शील समाज अपने बालकों की शिक्षा का दायित्व 'विद्यालय' जैसी संस्था को सौंप दिया। विद्यालयों में बालको के समुचित विकास हेतु जो ज्ञान राशी निश्चित एवं निर्धारित की गयी उसे पाठ्यक्रम की संज्ञा दी गयी।

पाठ्यवस्तु से आशय
(Meaning of Syllabus)

पाठ्यवस्तु पाठ्यक्रम का ही एक अंग है पाठ्यवस्तु को अंग्रेजी में Syllabus कहा जाता है। पाठ्यवस्तु में पाठ्य विषयो से सम्बन्धित सभी क्रियाओं का समावेश होता है। शिक्षक कक्षा में क्या पढायेगा ? तथा पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति किस प्रकार करेगा ?

Scanned with CamScanner

इसके लिए विषयवार विवरण Syllabus (पाठ्य वस्तु) में तैयार रहता है।

पाठ्य - पुस्तकें
(TEXT - BOOKS)

अनुदेशनात्मक सामग्री के रूप में प्रयोग की जाने वाली सामग्री पाठ्य पुस्तकें हैं। पाठ्यक्रम की वास्तविक रूपरेखा को पाठ्यपुस्तकों द्वारा ही विस्तार मिलता है जिससे वह शिक्षक व छात्र दोनों के लिए सुगम बन जाता है।

पुस्तकों के माध्यम से अतीत के ज्ञान तथा अनुभवों को संचित किया जाता है। इस प्रकार अच्छी पाठ्य पुस्तकें शिक्षण प्रक्रिया में निर्देशन का कार्य करती हैं।

परिभाषा - हैरोलिकर के अनुसार -

"पाठ्य-पुस्तकें ज्ञान, आदतों, भावनाओं क्रियाओं तथा प्रवृत्तियों का सम्पूर्ण योग हैं

अच्छी पाठ्य-पुस्तकों की विशेषताएं—

एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक (Text-Book) में निम्नांकित विशेषताएं होनी चाहिए

(i) विषयवस्तु का प्रकरण (प्रस्तुतीकरण) बालकों के मानसिक स्तर के अनुरूप हो।

(ii) व्याख्या, स्पष्टीकरण, उदाहरणों की सहायता से विषय का सरलीकरण।

(iii) भाषा-शैली में सरलता, स्पष्टता, मौलिकता।

(iv) चिन्तन एवं नवीन विचारों का प्रस्तुतीकरण

(v) अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों द्वारा स्व मूल्यांकन हेतु अभ्यास-प्रश्न।

(vi) मुद्रण शुद्ध, स्वच्छ व स्पष्ट हो।

(vii) चित्रों, रेखाचित्रों, मानचित्रों का अनुरूप प्रस्तुतीकरण

Scanned with CamScanner